Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

नारीवादः दशा और दिशा

डा0 रुचि पाण्डेय
एसो.प्रोफे. संस्कृत, आगरा कॉलेज, आगरा, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 2 Issue 3
Page Number : 141-144
Publication Issue :
May-June-2019
Article History
Accepted : 20 June 2019
Published : 30 June 2019

सारांश– भौतिकता की आड़ में नारी ने कहीं न कहीं अपनी पहचान खोई है। अतः हमें यह विचारना होगा कि विधाता की प्रथम सृष्टि जो श्रद्धा से परिपूर्ण व प्रेममयी स्वरूप की साक्षात् प्रतिमूर्ति है, उसके स्थान को सम्मानजनक विशिष्टता देनी ही होगी।

मुख्य शब्द–नारीवाद, दशा, दिशा, भौतिकता, साहित्य, सम्मान, नारी, दशा।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।।

– प्रसाद रचित कामायनी

प्रसाद द्वारा रचित उक्त पंक्तियाँ नारी के सम्मान को अभिव्यक्त करती हैं। निर्मल और अमृतमयी रूप रखने वाली, आस्था और विश्वास की प्रतिमूर्ति, सौन्दर्य की पराकाष्ठा का प्रतिरूप 'नारी', की 'दशा' पर विचार करने से पूर्व 'नारी' की उत्पत्ति, उसकी कालानुसार स्थिति पर भी विहंगम दृष्टि डालनी होगी तथा साहित्यिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक रूप से भी गहनता से विचार करना होगा।

नारी की पवित्रता, आधारनिष्ठा कोमलायुक्त दृढ़ता व्यवहारप्रियता तथा त्यागपूर्ण सेवा ने ही हमारी आदि संस्कृति को जन्म दिया है। मनुष्य के जीवन की प्रथम धड़कन नारी के कोख से ही संचारित होती है। उसकी स्नेहरूपी छाया तथा सुखद स्पर्श की अनुभूति में यह रेंगना, उठना, तुतलाना, बोलना सीखता है।

Mother is a such, a simple word.
but it means,. so much more,
It's a word full affection kindness and a love so immeasurable.
&
It's a word which describes you
And reflects everything which is
wonderful and joyous in the word.

संस्कृत साहित्य में 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्'' की नायिका 'शकुन्तला' का वर्णन, महाकवि कालिदास के अन्तस्थल में छिपी नारी की प्रेरणा शक्ति है। संस्कृत साहित्य में पण्डिता क्षमा राव की 'कथा संग्रह' की पात्र

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

नारी ही है। आशापूर्णा देवी की रचना 'प्रथम प्रतिश्रुति', प्रसाद द्वारा रचित कामायनी, ऊर्वशी, द्रौपदी आदि जैसे ग्रंथ है जो नारी स्वरूप और मनोदशा को दर्शाते है।

मनोवैज्ञानिक स्थिति के अनुसार—नारी किसी न किसी रूप में, सम्बन्धों की विश्वसनीयता पर विश्वास करती है और जब उसका विश्वास टूटता है तो वह काँच की तरह बिखर जाती है। किसी भी समस्या को सामाजिक समस्या न मानकर जब वह व्यक्तिगत रूप से सोचती है तभी वह विजयी होती है।

सामाजिक रूप से – 'नारी' को मर्यादित आचरण, चरित्रवान सम्बन्धों की प्रगाढ़ता को समझने का केन्द्र माना जाता था। उसके विवाह से पूर्व कौमार्य भंग होने पर चरित्रहीन व सामाजिक बहिष्कार की प्रताड़ना सहनी पड़ती थी। दिनकर द्वारा रचित– 'रश्मिरथी' में कर्ण से कुन्ती की प्रति कहलाई गई ये पंक्तियाँ–

वह नारी नहीं कुलपाली थी,
सर्पणी परम विकराली थी,
पत्थर समान उसका हिय था,
सुत से समाज बढ़कर प्रिय था?
गोदी में आग लगा करके,
मेरा कुलवंश छिपाकर के,
दुश्मन का उसने काम किया
माताओं को बदनाम किया।
समाज में 'कुमारी माँ' की स्थिति को दर्शाती है।

दुर्बल, कमजोर नारी का स्वरूप ही समाज में प्रतिबिम्बित नहीं होता है अपितु योद्धा के रूप में स्वतन्त्रता संग्राम में नारी ने देशभक्ति का परिचय देते हुए स्वतन्त्रता सेनानियों को प्रेरित भी किया है। उसके कदम, प्रत्येक क्षेत्र में उसकी दशा को वर्णित करते हैं।

वैज्ञानिक क्षेत्र में, कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, अमेरिका अन्तरिक्ष यात्री कथरीन कोलमैन है (जो स्पेस में स्टेज शो करना चाहती है)। उच्च पदों पर आसीन इन्दिरा नुई, राष्ट्रपति महिला प्रतिभा पाटिल, क्रीड़ा जगत में पी.टी. उषा (उड़नपरी), सानिया मिर्जा, पुलिस क्षेत्र में आई.पी.एस. किरण बेदी, एवरेस्ट चढ़ाई पर प्रथम महिला बचेन्द्री पाल का नाम कौन नहीं जानता।

वर्ष 2010 में, बी0डी0एम0एम0 स्था0 महाविद्यालय शिकोहाबाद की छात्रा नीलम यादव का प्रशासनिक अधिकारी के रूप में चयन इसी उपलब्धि को दर्शाता है जिसने महाविद्यालय, परिवार और नगर का नाम रोशन किया है।

राजनैतिक क्षेत्र में– सरोजनी नायडू, स्व. इन्दिरा गाँधी, जयललिता, सोनिया गाँधी, सुषमा स्वराज, रेणुका चौधरी कांग्रेस की प्रदेशाध्यक्ष रीता बहुगुणा, विजया राजे सिन्धिया का नाम किसी से छिपा नहीं है। विश्व सुन्दरी प्रतियोगिताओं में भारत की ही युक्तामुखी, ऐश्वर्या ऐसे नाम है जो विश्व में अपना स्थान रखते है।

नारी की दशा पर विचार करते हुए जहाँ एक ओर नारी अपने कदम को घर की देहलीज से बाहर निकालने में सफल हुई है वहीं दूसरी ओर सुरक्षा की दृष्टि से कहीं न कहीं वह अभी भी असुरक्षित हैं।

सोचना यह है कि सुरक्षा का दायित्व सम्भालने वाले भी तो पुरूष ही है जहाँ से समस्या जन्म लेती है लेकिन समाधान भी नारी के समीप ही है।

हिन्दुस्तान दिनांक 13 फरवरी 2011 में प्रकाशित खबर :– महिलाओं ने खबर पढ़ने की जंग' को जीता। 1970 के दशक में ब्रिटिश टेलीविजन में महिला 'एंकर एंजिला रियन और अन्ना फोड़े नियमित रूप से समाचार पढ़ने लगी तो यह अजूबा बना। महिला एंकर के लिए ये बड़ी चुनौती थी क्योकिं समाचार सुनने वाले पुरूष, लिपिस्टक से सजी, आकर्षक नयनों से निहारती महिलाओं के समाचार को सुनते कम थे, निहारते अधिक। धीरे–धीरे महिलाएँ पूरे मीडिया में इससे न घबरा कर छा गईं और अब 24 घण्टे टेलीविजन पर महिलाओं को एकरिंग करते देख सकते है। धारावाहिकों में भी विशेष रूप से 'ना आना इस देस लाड़ो' में हम नारी पर हो रहे अत्याचारों को पुरजोर विरोध करते हैं। यह कथन एक नई सोच है।

शैक्षिक रूप से– गणतन्त्र के पहले वर्ष में केवल 18 फीसदी लोग साक्षर थे जिनमें केवल 8 फीसदी महिलाएँ साक्षर थी। 2011 में 68 फीसदी साक्षरता में महिला साक्षरता 54 फीसदी है। शिक्षा के क्षेत्र में सरकार ने 52 जिलों में स्त्री साक्षरता को लागू कर दिया है। 'महिला आरक्षण' भी खुशनुमा चरण है। इन्जीनियरिंग, मैडीकल और शिक्षिकाओं के रूप में, उन्होंने अपना वर्चस्व कायम किया है।

खेलकूद जगत में– पाँच बार की विश्व चैम्पियन मुक्केबाज मणिपुर की एम.सी. मैरी कोम का नाम सर्वविदित है।

दिल्ली में हुई नेशनल शूटिंग चैम्पियनशिप में पाँच स्वर्ण जीतने वाली दीक्षा मात्र 15 साल की है।

एडमीशन फार्म में 'माँ' का नाम जोड़ना एक नई उपलब्धि है।

सरकार द्वारा महिला एवं बाल विकास के अन्तर्गत–

1– महामाया गरीब बालिका आर्शीवाद योजना में 1.80 लाख बालिकाओं को लाभान्वित किये जाने का लक्ष्य।

2– राजीव गाँधी किशोरी बालिका सशक्तिकरण योजना 'सबला' के लिये 109 करोड़ रूपये की व्यवस्था।

3– पति की मृत्योपरान्त निराश्रित महिलाओं तथा उनके बच्चों की शिक्षा हेतु 2011–12 में 587 करोड रूपये की व्यवस्था 18.30 लाख निराश्रित महिलाओं को लाभान्वित करने का लक्ष्य।

विकास की ओर कदम बढ़ाती नारी को सुदृढ़ता से पहचान बनानी होगी क्योंकि जहाँ वह ऊचाईयों को छू रही है वहीं दूसरी ओर समस्यायें भी कम नहीं हैं जिनमें मुख्य रूप से घटित निम्नलिखित घटनाऐं आज भी प्रश्न के रूप में सामने हैं।

नारी जागरूकता के पश्चात् भी जो प्रश्न समाज के समक्ष है उनमें :–

1. जेसिका काण्ड का आरोपी मनु शर्मा पर अभी तक कोई कार्यवाही क्यों नहीं हुई।
2. रूचिका काण्ड।
3. तन्दूर काण्ड में नैना की दर्दनाक मृत्यु भी नारी दशा की स्थिति प्रदर्शित करती है।
4. आरूषि काण्ड ऐसी मर्डर मिस्ट्री है जो नारी की सुरक्षा स्थिति पर प्रश्न खड़ा कर देती हैं। जिनमें स्वयं माता पिता कानून के शिकंजे में हैं।

ये ऐसे देश के चर्चित काण्ड है जिनमें नारी ही प्रभावित हुई है। भौतिकता की आड़ में नारी ने कहीं न कहीं अपनी पहचान खोई है। अतः हमें यह विचारना होगा कि विधाता की प्रथम सृष्टि जो श्रद्धा से परिपूर्ण व प्रेममयी स्वरूप की साक्षात् प्रतिमूर्ति है, उसके स्थान को सम्मानजनक विशिष्टता देनी ही होगी।

''औरत, भोग नहीं,

औरत, कोई/जोक) नहीं
जो आज भोगा और कल
मुस्कुरा दिए
कहाँ चल दिए

वह पीड़ा सहती है
कुछ नहीं कहती
दर्द (वेदना) सहती है।
उफ्र नहीं करती
उदर में रखती है वंश का
भार सहती है।

वह माँ है।
वह बहन है।
वह पत्नी है।
कोई पैसा नहीं।
जो आज चला और कल
खोटे सिक्के की तरह
फेक दिया
फेंककर चल दिए
नहीं

वह अमूल्य है
वह अनमोल है।
उसे संसार के किसी
तराजू के पलड़े
तौला नहीं जा सकता
वह राग है, विराग है।
वह सुख है।
वह जगत की शक्ति है।
यही मातृभक्ति है।

–स्वरचित

अनुक्रमणिका

1. कामायनी – श्री जयशंकर प्रसाद
2. रामायण – वाल्मीकि
3. महाभारत –वेदव्यास
4. अभिज्ञान शाकुन्तलम् – कालिदास
5. संविधान अनुच्छेद – 376, 376–A, 376–B, 376–C